ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

सामाजिक आर्थिक चरो के आधार पर वार्ड अनुसार बहरोड़ कस्बे के विकास का विश्लेषण

इन्दु
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

स्नेह साईवाल
एसोसिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बाबू शोभाराम महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन बहरोड़ कस्बे के विकास स्तर का वार्ड अनुसार आंकलन करता है। बहरोड़ कस्बा एक औद्योगिक क्षेत्र है और यह 1991 में उदारीकरण के बाद तीव्र गति से बढ़ रहा है। वर्तमान समय में औद्योगिक विकास के कारण जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है तथा पिछले कुछ दशकों से वृद्धि दर 45.3 प्रतिशत के आसपास बनी हुई है। इस अध्ययन में हम जननांककीय कारकों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में विकास के स्तर की समीक्षा करेंगे और देखेंगे कि विकास का अपसरण हो रहा है या अभिसरण हो रहा है। विभिन्न वार्डों के मध्य क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया है विकसित वार्डो में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि दर देखी गयी है तथा सामाजिक विकास भी पिछड़े वार्डों से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि आर्थिक विकास, सामाजिक विकास को निर्धारित करता है।

मुख्य शब्द : लिंगानुपात, साक्षरता, महिला श्रमिक, कार्यशील जनसंख्या, मुख्य श्रमिक वर्ग।

प्रस्तावना

बहरोड़ तहसील राजस्थान के अलवर जिले में स्थित है। यह अहिरवाल क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता हो बहरोड़ दिल्ली एनसीआर का एक हिस्सा है। यह राठ भूमि के नाम से भी जाना जाता है।

रॉर्स ने दूसरी राताष्दी ई.पू. में अपने सबसे बड़े किलो में से एक की स्थापना कर बहरोड़ गहर की स्थापना की। रॉर्स सम्रदाय मुख्य रूप से भारत–गगा के मैदानों के छोटे क्षेत्रों से आता है। प्राण सुख यादव में 1817 की क्रांति में राव तुलाराम कों अंग्रेजो के खिलाफ लड़ने के लिए क्रांति में राव तुलाराम को अंग्रेजो कें खिलाफ लड़ने के लिए पूरी तरह समर्थन दिया था। चन्द्र स्वामी, विवादास्पद तांत्रिक और कई राजनेताओं के आध्यात्मिक सलाहकार भी बहरोड़ के है। गांव बाटखानी अपने महान सैनिकों के लिए जाने जाते है जिन्होंने भारत की सेवा की थी।

विकास एक समग्र प्रकिया है जिसमें सामाजिक आथिक करकों की पहचान की जाती है एवं पुनर्निर्धारण किया जाता है। सामजिक विकास के लिए अनेक कार्यकम समय–समय पर चलाये जाते है जिसमें लोगों के जीवन की गुणवता, मूलभूत जरूरतों के साथ सामाजिक आर्थिक कल्याण को बहुत अधिक है कुछ क्षेत्र बहुत अधिक विकसित है तों कुछ अत्यन्त पिछड़े हुए हैं।

यह पेपर बहरोड़ कस्बे के वार्डों के बीच सामाजिक आर्थिक विभिन्नताओं का अध्ययन करेगा। यह आठ जननांककी चरो जिसमें लिंगानुपात, समान्य संख्या, साक्षरता, महिला साक्षरता, कुल कार्यशील जनसंख्या, महिला कार्यशील जनसख्या और समग्र इन्डेक्स द्वारा वार्डों के मध्य विभिन्नताओं के कारकों का अध्ययन करेगा।

अध्ययन क्षेत्र

बहरोड़ तहसील 27.88 उत्तरी अक्षांश एवं 76. 28 पूर्वी देशान्तर पर स्थित है । इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 312 मी. (1024 फीट) है। बहरोड़ जयपुर और दिल्ली के बीच 130 ाउण की दूरी पर एवं राष्ट्रीय राजस्थानी से 120ा बीच 130 ाउ की दूरी पर एवं राष्ट्रीय राजधानी से 120 ाउ बीच 130 ाउण दूर ह तथा NH-8 दोनों से जुड़ा हुआ है जो NHIA के स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना का हिस्सा है। बहरोड़ दो मेट्रोपॉलिटन के बीच बेहतर कनेक्टिविटी के लिए जयपुर से दिल्ली तक 6 लेन सड़क से जुड़ा हुआ है। अलवर से सीधी कनेक्टिविटी भी है जो 60 कि.मी. दूर है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. बहरोड़ कस्बे के विभिन्न वार्डों के मध्य विभिन्न जननांककीय चरों द्वारा विविधताओं का अध्ययन करना।
2. सामाजिक–आर्थिक विकास की क्षेत्रीय विभिन्नता का अध्ययन एवं वार्ड स्तर पर क्षेत्रीय विभिन्नता का अध्ययन करना।

शोध विधि

1. इस अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया है।
2. भारतीय जनगणना आंकड़े – 2011
3. जिला जनगणना Handbook 2011 के विभिन्न सांख्यकीय आंकड़े हमारे लिए उपयोगी है।
4. इन आंकड़ो से एकीकृत इन्डैक्टस तैयार किया गया है जिससे विकास के स्तर की समीक्षा वार्ड स्तर पर किया जायेगा।

सारणी–1

बहरोड़ कस्बे के वार्ड अनुसार जननीकीय चर

वार्ड	सामान्य जनसंख्या	साक्षरता दर (:)	लिंगानुपात	महिला साक्षरता (:)	कार्यशील जनसंख्या (:)	कार्यशीलता महिला (:)	मुख्य श्रमिक (:)	मुख्य महिला श्रमिक
1.	1893	71.4	869	47.0	29.8	11.3	56.8	36.3
2.	1418	70.4	911	42.9	29.0	8.3	81.3	62.7
3.	1752	71.1	906	72.2	35.2	7.0	98.4	97.1
4.	1000	83.3	866	50.7	39.4	22.7	94.5	88.4
5.	1047	80.1	840	83.0	33.8	8.2	96.5	100.0
6.	1089	78.8	945	82.4	32.5	5.1	98.4	100.0
7.	1793	69.4	943	67.8	32.96	11.2	86.8	45.9
8.	1439	71.3	891	68.0	33.3	15.9	94.2	93.1
9.	1304	77.1	909	74.0	33.6	8.3	93.6	85.7
10.	997	79.9	906	80.8	34.5	10.0	89.5	77.4
11.	1265	74.2	914	73.1	37.6	12.8	38.7	26.5
12.	1142	73.2	894	76.3	33.8	4.6	78.1	64.7
13.	1142	75.1	899	71.3	34.5	9.9	84.7	68.6
14.	1490	74.2	950	60.6	32.4	5.7	97.1	84.2
15.	921	78.3	883	62.6	37.4	19.8	80.3	47.1
16.	2308	64.7	911	59.2	38.2	19.8	933	82.8
17.	1462	75.2	770	27.6	42.4	35.6	86.1	81.3
18.	1680	81.1	942	35.3	30.5	10.8	89.3	93.6
19.	2335	60.7	882	34.2	39.5	25.0	47.3	3.6
20.	2055	77.1	898	63.1	33.3	10.8	96.7	96.6
$\overline{X}$	1476ण6	74ण48	896ण45		61ण6	13ण2	84ण1	71ण8
SD	421ण76	5ण39	39ण89		16ण8	7ण8	17ण1	27ण2

वार्ड अनुसार सामाजिक–आर्थिक चरों की समीक्षा

लिंगानुपात

बहरोड़ नगरपालिका का लिंगानुपात 897 है जो राज्य के औसत 928 से 31 अंक कम है। 0–6 वर्ष का लिंगानुपात 842 है जो राज्य के औसत 888 से काफी कम है। वार्ड अनुसार भी बहुत विविधता है। वार्ड नं. 14 में सर्वाधिक लिंगानुपात है (950) वहीं दूसरी तरफ न्यूनतम लिंगानुपात वार्ड नं. 17 में (770) है। यह स्पष्ट होता है कि न्यूनतम और अधिकतम के मध्य बहुत अन्तराल है तथा वार्डों के मध्य भी बहुत विविधता है। इस लिंगानुपात में अन्तर आर्थिक विकास में अन्तर के कारण है वार्ड नं. 17 बहरोड़ की पुरानी आवासीय बस्ती है जिसके कारण लिंगानुपात अधिक है वहीं वार्ड नं. 14 नवीनतम आवासीय, होटल, रेस्टोरेंट तथा व्यवसायिक कामकाज वाली बस्ती है जिसके कारण लिंगानुपात सबसे कम है। इससे स्पष्ट

होता है कि आर्थिक विकास सामाजिक विकास को निर्धारित करता है।

जनसंख्या

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि वार्ड अनुसार जनसंख्या में भी बहुत अन्तर है। वार्ड नं. 19 में 2335 जनसंख्या है वहीं वार्ड नं. 10 में 997 लोग रहते हैं। वार्डों के मध्य भी जनसंख्या की बहुत विविधता है। यह विविधता भी आर्थिक विकास से जुड़ी हुई है। जहां आर्थिक विकास अधिक हुआ है वहां अधिक जनसंख्या निवास करती है वहीं आर्थिक रूप से पिछड़े वार्डों में कम जनसंख्या निवास करती है। जहां आर्थिक गतिविधियां एवं आर्थिक विकास अधिक होता है वहां जनसंख्या अधिक निवास करती है।

साक्षरता

बहरोड़ नगरपालिका की कुल साक्षरता 84.07 प्रतिशत जो राज्य के औसत (66.11) से बहुत अधिक है। पुरूष साक्षरता 92.15 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 75.13 प्रतिशत है। वार्ड अनुसार साक्षरता में बहुत अन्तर है। सबसे अधिक साक्षरता वार्ड नं. 4 में (81.9 प्रतिशत) है वहीं सबसे कम साक्षरता वार्ड नं. 19 (60.7 प्रतिशत) में है। देखा जाए तो वार्ड नं. 19 आर्थिक विकास में अग्रणी है फिर भी साक्षरता में पीछे है इसके पीछे का कारक वह मजदूर वर्ग की बहुलता है जो शिक्षा के प्रति कम जागरूक है। सबसे अधिक साक्षरता वाले वार्ड 4, 5, 18 है, मध्यम साक्षरता वाले वार्ड 11,12,13 निम्न साक्षरता वार्ड – 2,3,8 है तथा न्यूनतम साक्षरता वाले वार्ड–16, 19 है।

महिला साक्षरता

महिला साक्षरता में भी वार्ड अनुसार बहुत अधिक विविधता है। वार्ड नं. 5 जहां 83.0 प्रतिशत महिला साक्षरता में सबसे उपर है वहीं वार्ड नं. 17 27.6 प्रतिशत महिला साक्षरता में निम्नतम पायदान पर है। महिला साक्षरता में वार्डों की मध्य भी बहुत अधिक विविधता है। सर्वाधिक महिला साक्षरता वाले वार्ड–10, 11, 12 मध्यम साक्षरता वाले वार्ड – 14,15,16, न्यूनतम साक्षरता वाले वार्ड 17,18,19 है। साक्षरता में यह अन्तर आर्थिक विकास से जुड़ा है जिन वार्डों का विकास पहले से हो रखा है, जिसमें महिला कामगार है वहां महिला साक्षरता अधिक है वहीं दूसरी तरफ जहां फैक्ट्री, विकासशील वार्ड है वहाँ महिला मजदूरों की संख्या अधिक होने एवं उनमें जागरूकता का अभाव होने के कारण साक्षरता की कमी है तथा आधारभूत सुविधाएं जैसे – स्कूल, कॉलेज दूर स्थित होने के कारण साक्षरता में बाधक है।

कार्यशील जनसंख्या

बहरोड़ नगरपालिका में 35 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या है। पिछले कुछ दशकों जब से औद्योगिकरण होना शुरू हुआ है तब से कार्यशील जनसंख्या में वृद्धि देखी गयी है। सबसे कम कार्यशील जनसंख्या वार्ड नं. 2 में 29 प्रतिशत है। गंदी बस्ती के कारण यह सबसे कम कार्यशील जनसंख्या है। सबसे अधिक कार्यशील जनसंख्या वार्ड नं. 17 में जो कि सर्वाधिक विकसित है अतः विकास से कार्यशील जनसंख्या का निर्धारण होता है। समग्र रूप से देखा जाए तो कार्यशील जनसंख्या का कम प्रतिशत साक्षरता में कमी, उच्च शिक्षा के लिए प्रवास, पर्याप्त रोजगार की कमी के कारण है।

महिला श्रमिक

अध्ययन में पाया गया है कि केवल एक वार्ड – वार्ड नं. 17 है जो 30 प्रतिशत से अधिक 36 महिला श्रमिक रखता है। यह आर्थिक रूप से एवं आधारभूत संरचना से विकसित वार्ड है। श्रमिक वर्ग बाहर से रोजगार की तलाश में यहां आकर बसे हुए है। सबसे कम महिला श्रमिक वार्ड नं. 12 में है इसमें रेस्टोरेंट, होटल, महिलाओं के रोजगार के कम अवसर प्रदान करते हैं।

मुख्य श्रमिक

मुख्य श्रमिक वो होते हैं जो सालभर में 6 महिने से अधिक का रोजगार प्राप्त करते हैं। बहरोड़ नगरपालिका में प्राथमिक गतिविधियों में कृषि प्रमुख है तथा बड़ी गतिविधियों में फैक्ट्री, उद्योग आते हैं। इस अध्ययन से पता चलता है कि सबसे कम मुख्य श्रमिक वार्ड नं. 11 (38 प्रतिशत) है। हॉटल्स, गेस्ट के कारण ऐसा है। सबसे अधिक मुख्य श्रमिक वार्ड नं. 6 (98.5 प्रतिशत) है जो उद्योग धंधों के कारण है।

मुख्य महिला श्रमिक

वार्डों के मध्य मुख्य महिला श्रमिकों के प्रतिशत में बहुत अधिक विविधता है। सबसे कम वार्ड नं. 19 में (3 प्रतिशत) जो कार्यशील अवस्था में है। सबसे अधिक महलिा मुख्य श्रमिक वार्ड नं. 5 एवं 6 में है। हॉटल्स एवं रिसोर्ट महिलाओं को स्थाई रोजगार प्रदान करते हैं। अध्ययन से पता चलता है कि 20 वार्डों में से केवल 5 वार्ड ही 50 प्रतिशत महिला मुख्य श्रमिक का प्रतिशत रखते हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ो जैसे साक्षरता, लिंगानुपात, कार्यशील जनसंख्या, मुख्य श्रमिक, महिला श्रमिकों की समीक्षा से हम निम्न नतीजों पर पहुँचे हैं –

1. शहर की जनसंख्या बहुत तजी से बढ़ रही है जो 46.3 प्रतिशत के आसपास है। जनसंख्या से संबंधित विविध कारक विकास को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
2. अध्ययन से ज्ञात होता है कि वार्ड नं. 17 सर्वाधिक विकसित वार्ड है। यह न केवल एक चर में विकसित वार्ड है बल्कि विभिन्न सामाजिक आर्थिक चरों में विकसित वार्ड है।
3. औद्योगिक विकास के कारण पूर्वी एवं पश्चिमी शहर का विकास हो रहा है तथा शहर इस दिशा में बढ़ रहा है।
4. औद्योगिक विकास के कारण औद्योगिक क्षेत्र के पास विकास अधिक हुआ है जैसे त्प्प्ब् ब्वसवदल विकसित बस्ती है।
5. जैसे कि स्पष्ट है कि इस क्षेत्र का मुख्य व्यवसाय उद्योग धंधे हैं जहाँ अन्य राज्यों से आकर भी लोग बसने लगे हैं जिसमें सबसे अधिक संख्या यू.पी., बिहार के लोगों की है।
6. दिल्ली एनसीआर में अवस्थिति एवं बेहतर कनेक्टीविटी एवं रोजगार के साधन यह जनसंख्या को आकृषित कर रहे हैं जिसमें राज्य स्तर एवं अन्य

राज्यों से लोगों का आव्रजन हो रहा है जो औद्योगिक विकास के लिए भी फायदेमंद एवं बेरोजगारी को कम करने में भी कारगर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Milan Kumar Yadav and Bajrang Lal Meena – Assessment and Inferences of Inter Ward Development in Ajmer City", Annals of the RGA Vol. XXXVII, 2015, pp. 58-66.*
2. *Sinigalias P.C. and A.J Dentsoras – "A Composite Index for the Evaluation of Standardization level of Mechanic Systems" DS 77: Proceedings of the Design 2014 13th International Design Conference, 2014.*
3. *Diener, Ed. and Eunkooksuh. "Measuring quality of life: Economic, social and subjective indicators." Social Indicators Research, 40.1 (1997): 189-216.*
4. *Roberto Ezcurra, Manuel Rapun. Regional Disparities and National Development Revisited", European Urban and Regional Studies Vol. 13, Issue 4, pp. 355-369.*
5. *Primary Census Abstract-2011, Office of the Registrar General & Census Commissioner, India Ministry of Home Affairs, Government of India.*
6. *District Census handbook of Alwar 2011, Directorate of Census Operations Rajasthan.*